

## सुभद्रा कुमारी चौहान एवं स्त्री दृष्टि

प्रियंका सिंह

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग  
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 ई० में हुआ। जब स्त्री-मुक्ति की बात सोचना भी पाप माना जाता था। ऐसे समय में वर्जनाएं तोड़ने और हाशिए उलाघने की बात सोचना ही अपने आप में एक क्रान्तिकारी कदम है। उसी मुक्त सोच से अंकुरित फसल जो हमारे बीच आज तनकर खड़ी है।

जिनमें सुभद्रा कुमारी चौहान एक प्रमुख नाम है, जो घर से बाहर ही नहीं बल्कि महिला के रूप में प्रथम सत्याग्रही भी बनीं। इनका विवाह मध्य प्रदेश में लक्ष्मण सिंह से हुआ था। इनके पति गाँधी जी के सम्पर्क में रहते थे। ये भी गाँधी जी से प्रभावित हुई कई बार जेल भी गई। अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से इन्होंने सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से दर्शाया है।

इनकी सबसे चर्चित कविता “झाँसी की रानी” रही। परन्तु कविताओं के अलावा इन्होंने गद्य रचनाएँ भी की। इनकी प्रमुख कहानी संग्रह- 1. बिखरे मोती, 2. उन्मादिनी, 3. सीधे-साधे चित्र।

इसमें विशेष रूप से ‘बिखरे मोती’ एवं ‘उन्मादिनी’ कहानी को पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत हुआ जैसे यह महिला “खुब लड़ी मर्दाना” को सार्थक तो करती रही परन्तु इनकी गद्य रचनायें भी अधिकांशतः स्त्री-विमर्श पर आधारित है। परन्तु विद्वानों ने इनका एक ही पक्ष उजागर करना उचित समझा जिन्हें हिन्दी साहित्य में मात्र राष्ट्रीय काव्यधारा से जोड़कर इनके कार्यक्षेत्र को सीमित कर दिया गया। इनकी सम्पूर्ण कहानियों का संग्रह हिन्दी की आलोचक और सम्पादक डा० मधु शर्मा ने किया। आगे और भी इनकी स्त्री-विमर्श सम्बन्धी रचनाओं को विभिन्न विद्वानों द्वारा स्त्री-विमर्श की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य किया इनमें कुछ एक नाम है रोहिणी अग्रवाल, रमणिका गुप्ता, डा० सुनीता मण्डल ने “सुभद्रा कुमारी चौहान का कथा साहित्य समग्र विश्लेषण” नामक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखा। रमणिका गुप्ता ने अपनी एक पुस्तक “हाशिए उलाघती औरत” में उन लेखिकाओं के कहानियों को संग्रहित किया है जिन्होंने आजादी के पूर्व स्त्री-मुक्ति के अपने विचार रखने का हिम्मत करती है जिनमें - “सुभद्रा कुमारी चौहान स्वाधीनता आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही थी। स्त्री की दशा में सुधार और परिवर्तन के आन्दोलनों की प्रवाहधारा में इनका प्रत्यक्ष योगदान था।”<sup>1</sup> रमणिका जी ने आजादी से पूर्व की महिला रचनाकारों को ‘कोठी के धान’ नाम से सम्बोधित किया है।

सुभद्रा कुमारी चौहान की दो प्रमुख कहानियों की हम चर्चा करते हुये उनकी स्त्री दृष्टि का अध्ययन करेंगे-

जिसमें एक कहानी ‘ग्रामीण’ है जो ‘बिखरे मोती’ में संग्रहीत है जिसको पढ़ने के बाद यही लगता है कि मनुष्य जीवों में इतना श्रेष्ठ होते हुये वो कैसे ऐसा कर सकता है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को पालतू जानवरों के जैसे रखना पसन्द करें। जो खिलाये एक वही खाय जो पहनाये वही पहने, जहाँ रखे वही रहे।

यह एक ग्रामीण स्त्री के जीवन पर लिखी कहानी है जो विवाह से पूर्व गाँव में स्वच्छन्द रूप से बगीचों, फुलवारियों एवं खेतों में खेलती, पलती बड़ी होती है। एक सम्पन्न परिवार की इकलौती संतान है। हमारे भारतीय

समाज में स्त्री का विवाह कम उम्र में कर देना ही उचित माना जाता है। एक योग्य वर ढूँढकर शहर में सोना का विवाह हो जाता है। शहरी बाबू के घर में स्त्रियों परदे के बाहर नहीं दिखती। शहरी बाबू हि क्या लगभग सभी समाज में गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते ही स्त्री को बहुत सारे रीति-रिवाजों को अपनाना पड़ता है, कुछ स्त्रियाँ इसका विरोध भी करती हैं तो उन स्त्रियों को अच्छा नहीं समझा जाता है। कुछ ऐसी ही परिस्थितियों से सोना को भी गुजरना पड़ता है। हर काम में रोक टोक एक बड़े घर की बहू होने के नाते सभी सुविधाओं के बीच रहते हुये भी सोना उस घर में प्रसन्न नहीं रहती अन्ततः वह आत्महत्या कर लेती है क्योंकि उसे बहुत ठेस पहुँचता जब वह कुछ अपने इच्छानुसार करती है तो पति की खरी-खोटी सुननी पड़ती जिससे पति भी काफी फ्रस्टेट हो जाता सोना खुद को इसका वजह मानकर वह अपने में पश्चाताप करती तथा बीमार भी हो जाती है। इन सबसे उबकर वह मौत का रास्ता चुन लेती है। एक चिट्ठी भी लिखकर छोड़ जाती है, जिसमें वह यही लिखती है कि - “मेरे देवता! मैं मर रही हूँ। मरने वाला झूठ नहीं बोला करता आज तो अंतिम बार विश्वास कर लेना। मैं निर्दोष थी। मुझे लगता है या तो यह दुनिया मेरे लायक नहीं या मैं इस दुनिया के लायक नहीं इस छल-कपट से परिपूर्ण संसार में मुझे भेजकर विधाता उचित नहीं किया। आप मेरी कठिनाई नहीं समझ सके। एक वातावरण से दूसरे वातावरण में पहुँचकर मैं अपने को शीघ्र है। अनुकूल नहीं बना पाई अपने मरने का मुझे कोई अफसोस नहीं है, दुःख है तो केवल इस बात का कि मैं आपको सुखी न कर सकी।”<sup>2</sup>

सुभद्रा कुमारी चौहान ने सचमुच ‘बिखरे मोती’ में उस समय के समाज में स्त्री की सभी दशाओं को उद्घाटित किया है जो उस समय में बड़े हिम्मत की काम थी और उनके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों से चुनी गई कहानियाँ ‘बिखरे मोती’ जो की अपने नाम को सार्थक प्रतीत करती हैं। “उन्मादिनी” इनका दूसरा कहानी संग्रह है जिसकी पहली कहानी ‘उन्मादिनी’ नाम से ही है जो कि ‘ग्रामीण’ कहानी से मिलती जुलती हुई स्त्री के प्रेम जीवन की कहानी है। इसमें जिस समस्या को लेखिका ने दिखाया है वह आज भी समाज को पतनोन्मुख ही करती जा रही है। जिसकी कहानी कुछ इस प्रकार है- स्त्री जिस पुरुष को चाहती है जिसके साथ उसका लम्बा समय एक दूसरे के दुःख-सुख में भागीदारी के साथ गुजरी हो एवं दोनों एक दूसरे को समझते हो फिर भी कुछ ऐसे परिवार हैं जो अपने सन्तानों का विवाह करते हुये उनकी राय लेना उचित नहीं मानते हैं और यह समस्या आज भी देखने को मिलता है। ऐसे समय में कुछ एक हिम्मत दिखाते हैं तो परिवार से बगावत समझा जाता है, जो बहुत सी समस्याओं का मूल कारण बनता है। स्त्री को ज्यादा कठिनाई का सामना करना पड़ता है। एक नये व अनजान रिश्ते से बंधने पर स्त्रियों का शोषण बढ़ जाता है जो उनके अपने पति एवं अन्य सदस्यों द्वारा होता रहता है। ‘एक दिन ऑफिस से लौटते ही पतिदेव ने मुझसे प्रश्न किया आखिर उस माली से तुम्हें क्या बातें करनी रहती हैं जो दोपहर को भी बगीचे में जाया करती हो कितनी बार तुमसे कहा कि नौकरों से बातचीत करने की तुम्हें जरूरत नहीं है। पर तुम्हें मेरी बात याद रहे, तब न!’<sup>3</sup>

‘सुभद्रा कुमारी चौहान एक साथ ही प्रगतिशील स्त्री, गृहिणी या कवि, लेखिका, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जननेत्री व राजनेता थीं। वे जमीन से जुड़ी हुई स्त्री हैं।

दलित चेतना और स्त्रीवादी विमर्श को उठाने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी की पहली कहानीकार हैं। ‘सीधे-सीधे चित्र’ सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है। इसमें कुल 14 कहानियाँ हैं। रूपा, कैलाशी, नानी, बिआहा, कल्याणी, दो सखियाँ, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी व मंगला 8 कहानियों की कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक सामाजिक समस्याओं पर आधारित है। सुभद्रा जी की समकालीन स्त्री-कथाकारों की संख्या अधिक नहीं थी। अपनी व्यापक कथा दृष्टि से वे एक लोकप्रिय स्त्री विमर्श की ध्वज वाहिका कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं। समय के साथ भले ही सुभद्रा जी की कहानियों के परिवेश का वर्णन आज के समय से भिन्न रहा हो, लेकिन जिस समय वह अपनी लेखनी चला रही थी; सामाजिक व पारिवारिक कुरीतियों एवं समस्याओं पर वह एक क्रान्तिकारी कदम रहा है। सुभद्रा जी को हिन्दी साहित्य इतिहास में विशेष स्थान नहीं मिल पाया। उन्हें देश भक्ति की भावना से जोड़कर एक क्षेत्र विशेष में सीमित कर दिया गया।

महादेवी वर्मा ने अपनी रचना ‘पथ के साथी’ में सुभद्रा कुमारी चौहान के विषय में कहती हैं-‘परम्परा का पालन ही जब स्त्री का परम कर्तव्य समझा जाता था तब वे उसे तोड़ने की भूमिका बाँधती हैं-चिर-प्रचलित रूढ़ियों और चिर-संचित विश्वासों को औघात पहुंचाने वाली हलचलों को हम देखना-सुनना नहीं चाहते। हम ऐसी हलचलों को अधर्म समझकर उनके प्रति आख मीच लेना उचित समझते हैं, किन्तु ऐसा करने से काम नहीं चलता। वह हलचल और क्रान्ति हमें बरबस झकझोरती है और बिना होश में लाये नहीं छोड़ती।’

सुभद्रा जी अनेक समस्याओं की ओर इतनी पैनी दृष्टि रखती हैं कि सहज भाव से कही गयी सरल कहानी का अन्त भी हमें झकझोर डालती है।

\*\*\*\*\*

सन्दर्भ सूची:-

1. हाशिए उलांघती औरत (कहानी) हिन्दी संपादक, रमणिका गुप्ता, अर्चना वर्मा, पृष्ठ सं. 21
2. सुभद्रा कुमारी चौहान, सम्पूर्ण कहानियाँ-डॉ० मधु शर्मा, पृष्ठ सं. 171
3. सुभद्रा कुमारी चौहान, सम्पूर्ण कहानियाँ-डॉ० मधु शर्मा, पृष्ठ 159

## हिमांशु जोशी कृत ‘कगार की आग’ उपन्यास में ऑचलिकता

नवीन नाथ

शोधार्थी

मो0 8193821884, 9258379184

**शोध सारांश-** उपन्यास साहित्य में हिमांशु जोशी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने हिंदी के ऑचलिक उपन्यासों को बहुत कुछ नयापन दिया है। उनके दो ऑचलिक उपन्यास हैं- अरण्य और कगार की आग। हिमांशु जोशी ने कगार की आग, उपन्यास में पहाड़ की एक दलित महिला को उभारा है, जिसमें अल्मोड़ा जिले के लघौना गांव की गोमती की कहानी है।

**मुख्य शब्द-** ऑचलिकता, क्षेत्र विशेष की पृष्ठभूमि, भौगोलिक राजनीतिक पृष्ठभूमि, संस्कृति, जातिगत चेतना, अज्ञानता, अत्याचार, विवाह समस्या, परिवार विभाजन, निष्कर्ष।

‘कगार की आग’ उपन्यास में ऑचलिकता- ‘कगार की आग’ उपन्यास की ऑचलिकता को स्पष्ट करते हुए हिमांशु जोशी लिखते हैं: “आग की तपिश ही नहीं, इसमें हिम का दाह भी है। अनुभव की प्रमाणिकता और अनुभूति की गहनता ने इस कालत्रयी कृति को एक नया आयाम दिया है। यही इसकी सबसे बड़ी विशेषता है, शायद बर्फीले पर्वतीय क्षेत्र की इस कथा में एक अंचल विशेष की धरती की धड़कन है। एक जीता जागता एहसास भी, गोमती, पिरमा, कन्नु के माध्यम से स्वतंत्र मानव समाज के कई चित्र उजागर हुए हैं। इसलिए यह कुछ लोगों की कहानी, नहीं सबकी कहानी बन गयी है। देश-काल की परिधि से परे।”<sup>1</sup> हिमांशु जोशी ने भौगोलिक दृष्टि से गांव का प्राकृतिक वातावरण चित्रित किया है। उत्तराखण्ड के लघौना गांव के पास होने वाली लोहारों की बस्ती का वर्णन लेखक ने किया है। इस गांव के पास ही जोस्यूड़ा की नदी बहती है। प्रारम्भ में ही हिमांशु जोशी जी ने स्वीकार किया है: “एक गांव की कहानी है यह। गांव का नाम कुछ भी हो सकता है। किसी भी नामों से पात्रों को संबोधित किया जा सकता है। क्या अंतर पड़ता है इससे! यह उन अभिशापों की जीवन गाथा है जो समाज द्वारा बहिष्कृत किए गए हैं। सदा के लिए तिरस्कृत।”<sup>2</sup>

हिमांशु जोशी ने जिस प्रकार प्राकृतिक वातावरण को चित्रित किया है, ठीक उसी प्रकार ऑचलिकता को भी अनेक रूपों में विभक्त किया है। गोमती खुशाल के घर रहने लगती है। वहीं पंचायत के चलते पिरमा की हत्या हो जाती है। इसी कारण यहाँ आत्महत्या के दिखावे का वर्णन इस प्रकार हुआ है: “आधी रात तक गांव के बजुर्ग-बूढ़ों को अपने घर में घेरकर पंचायत बैठाता रहा। पुलिस पटवारी का भय था, आदमी की हत्या के मामले में सारा गांव उजड़ जाता, इसलिए पिरमा की लाश चुपके से घर में बांधकर उस पर मिट्टी का तेल छिड़कर आग लगा दी। उसने कह दिया कि झोपड़ी में आग लगने के कारण जलकर मर गया बेचारा।”<sup>3</sup>

लोक जीवन आत्मा की संस्कृति होती है। ‘कगार की आग’ में लेखक ने मेले, त्यौहार, जैसे- देवीधुरा का मेला, फूलडोल मेला, हरेला, ब्यानधुरा मेला का वर्णन किया है। गोमती, देवीधुरा मेले में अपनी सहेली धरी के साथ जाती है। जब गोमती फूलडोल मेले में जाती है, तो खुशाल उसे जबरदस्ती गहने पहनाता है। आधुनिक समाज तीन वर्गों में विभक्त है, जिसमें ‘कगार की आग’ उपन्यास को दो वर्गों में विभक्त किया गया है। निम्न वर्ग और मध्य वर्ग। खुशाल राम निम्न वर्ग का प्रतीक है, वह गोमती को अपने घर रहने के लिए कहता है, लेकिन अब